Hkkjrh; turk ikVhZ

jk"Vªh; dk;Zdkfj.kh cSBd

gksVy jax 'kkjnk] fjDyses'ku] ckUnzk ¼osLV½] eqEcbZ

26&27 fnlEcj] 2005

lçx ljdkj dh fons'k uhfr lEcU/kh çLrko

26–27 दिसम्बर 2005 को 'रजत जयंती समारोह' के दौरान मुंबई में भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक इस पर असंतोष और गंभीर चिंता व्यक्त करती है कि वर्तमान सरकार के पास एक ठोस विदेश नीति विज़न की दिशा का अभाव है। अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में की गई गलतियां और खोखली नीतियों के चलते, पहले के कांग्रेसी शासन के दौरान देश को भारी कीमत चुकानी पड़ी है और यह फिर से संप्रग सरकार के तहत होने जा रहा है। पूर्व में निर्णयों के संदर्भ में की गई हमारी गलतियों ने पड़ोसियों के साथ हमारे सम्बन्धों को उलझाया, इन्हें अब उन्हीं गलतियों को पुनः दुहरा कर संप्रग द्वारा और जटिल बनाया जा रहा है। अनेक मोर्चों पर मिल रही इन असफलताओं के इकट्ठे होने की कीमत चुकानी पड़ेगी।

पाकिस्तान रणनीतिक तौर पर संप्रग सरकार के रूख से उत्साहित होकर भारत के साथ रणनीतिक समानता की अयथार्थवादी कोशिशों में लगा है। नेपाल और श्रीलंका में संघर्ष और उथल–पुथल मची हुई है। बंगलादेश आज आतंकवाद की शरणस्थली बन गया है और तेजी से भारत के विरुद्ध प्रच्छन्न युद्ध का एक वैकल्पिक केन्द्र और विभिन्न आतंकवादी समूहों की शरणस्थली के रूप में उभर रहा है।

cxykns'k

बंगलादेश से अवैध घुसपैठ को कांग्रेस और मार्क्सवादी सरकारों द्वारा प्रोत्साहित करने की प्रक्रिया को संप्रग सरकार ने भी अपने संदिग्ध चुनावी लाभ के विस्तार हेतु अपना लिया है। चुनावी लाभ उठाने की इस नीति के चलते हमारे पूर्वोत्तर के प्रदेश और पश्चिम बंगाल के सीमावर्ती जिले अत्यंत संवेदनशील क्षेत्र बन गए हैं, जिनसे सुरक्षा व्यवस्था पर खतरनाक प्रभाव पड़ रहा है। इसके बावजूद संप्रग सरकार और

उसके मार्क्सवादी सहयोगी वास्तविकता को नकारते हुए भारत की सुरक्षा को उठते खतरे को उपेक्षित करते हुए दिल्ली में बंसी बजा रहे हैं जबकि पूर्वोत्तर जल रहा है। सरकार को इस बारे में अवश्य ही स्थिति साफ करनी चाहिए और इसे तत्काल सुधारना चाहिए।

इसके अतिरिक्त संप्रग सरकार के पास उस बंगलादेश की सरकार से निपटने हेतु कोई साफ नीति नहीं है जो लगातार उग्रवादियों को भेजने के साथ–साथ भारतीय उग्रवादियों को संरक्षण दे रही है, इसी देश ने भारतीय सुरक्षा बल के अधिकारियों को पकड़कर पीटा और मार दिया और संप्रग केवल समझौतावादी राग अलापती रह गई। यह स्वीकार्य नहीं है।

ikfdLrku vkSj lhekikj vkradokn

बार–बार यह दोहराने से कि ''शांति प्रक्रिया अपरिवर्तनीय है'' और ''आतंकवाद की घटनाएं'' भारत को समझौते करने के रास्ते से हटा नहीं सकती जबकि वास्तविकता में सरकार ने 'सीमापार के आतंकवाद' के महत्वपूर्ण मुद्दे को छोड़ दिया है जो हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए नाजुक है। इससे पाकिस्तान को आतंकवादी शिविरों के ढांचे को बरकरार रखने में सहायता मिल रही है जो जरूरत पड़ने पर भारत के विरुद्ध उपयोग के लिए तैयार है। संप्रग और कांग्रेस को यह जान लेना चाहिए कि राष्ट्रीय हितों को भुलाकर शांति नहीं खरीदी जा सकती।

पाकिस्तान के साथ शांति प्रक्रिया की पहल करने वाली भारतीय जनता पार्टी इसके सकारात्मक और उद्देश्यपूर्ण चालू रखने की पक्षधर है, साथ ही 'शांति का दायरा' लगातार बढ़ाने की हामी है लेकिन निश्चित रूप से भारत के हितों की कीमत पर नहीं। लगातार मिल रही चुनौती के प्रति इस सरकार की नीति भ्रमित करने वाली है। यह राष्ट्रीय इच्छा शक्ति को नुकसान पहुंचाती है। संप्रग सरकार को यह बात भलीभांति समझ लेनी चाहिए कि पाकिस्तान शांति वार्ता से जेहादी आतंकवादियों का हतोत्साहन नहीं हुआ है, और यह भी कि पाकिस्तान ने 06 जनवरी 2004 को घोषित साझा घोषणापत्र में किए गए अपने वायदे को नहीं निभाया है। इसलिए सरकार इसमें सही सबक ले और कड़ाई से कार्रवाई करे।

uiky

नेपाल जैसे महत्त्वपूर्ण पड़ोसी के साथ व्यवहार करते समय भी भारत की विदेश नीति एक छोर से दूसरे छोर के बीच डोलती नजर आती है। नेपाल में प्रजातंत्र को प्रोत्साहन देने की बात भाजपा ने हमेशा की है। भाजपा ने पहल करते हुए सदैव नेपाल के संबंध में द्विस्तंभीय नीति का समर्थन किया है: ''एक सशक्त लोकतंत्र एवं संवैधानिक राजतंत्र'', ये दोनों स्तम्भ काफी महत्वपूर्ण हैं। नेपाल का नागरिक समाज माओवादियों के कारण खतरे में है जो मनमानी हिंसा का दौर चला रहे हैं। सरकार को अपना रुख खुल कर स्पष्ट करना चाहिए।

Hkkjr&vejhdk lac/k

क्लिंटन प्रशासन ने पहली बार भारत को एक ''स्वाभाविक मित्र'' के रूप में पहचाना था और इस कारण सामरिक नीतियों के मुद्दे पर भी एकीकरण की अपेक्षा की थी। राजग सरकार द्वारा जनवरी 2004 में बुश प्रशासन के साथ एन.एस.एस.पी. की घोषणा नागरिक–परमाणुविक गतिविधियों, नागरिक अंतरिक्ष कार्यक्रम, उच्च तकनीक, व्यापार एवं मिसाइल सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने की दृष्टि से की गई थी। ये सभी मुद्दे जिन्हें 2005 में भारत–अमरीका सम्बन्धों में महत्त्वपूर्ण पड़ाव के रूप में माना गया पहले ही अस्तित्व में आ चुके थे, जब अमरीका के साथ राजग सरकार ने बातचीत की थी। राजग सरकार की नीति का केन्द्र बिन्दु ही भारत–अमरीका सम्बन्धों में लगातार सुधार लाना था, जिसमें दोनों देशों की नीतियों में समानताएं एवं अन्तर्विरोधों को भी ध्यान में रखा गया था।

हमें साथ ही यह बात भी भलीभांति समझनी होगी कि 'सामरिक दोस्ती' समान्यतया बराबरी वालों में होती है। अमरीका के साथ कैसा भी सामरिक गठजोड़ या किसी भी तरह का असंतुलित मित्रता, सामरिक दोस्ती नहीं बल्कि आत्मसमर्पण कहा जाएगा। जुलाई 2005 में प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह की यात्रा के बाद से जिस प्रकार घटनाओं ने मोड़ लिया है उससे स्पष्ट है कि स्वतंत्र निर्णय लेने की अब कोई गारंटी नहीं है।

इस कारण ही अमरीका से व्यवहार करते समय संप्रग की नासमझी काफी चिंतित करने वाली है। संप्रग सरकार की चाटुकारिता भरी नीतियों को देखते हुए यह

आशंका बनी है कि भारत–अमरीका सम्बन्ध कहीं नुकसानदायक असंतुलन की तरफ न फिसल जाए और दोनों देशों के मध्य दीर्घकालीन सम्बन्धों एवं सहयोग को नुकसान पहुंचे। संप्रग सरकार निश्चित रूप से अमरीका के साथ दासत्व सरीखे सम्बन्धों के प्रति भारत की जनता की वितृष्णा को समझ नहीं पायी है।

l|j{kk dk okrkoj.k

हाल के दिनों में कुछ अमरीकी 'थिंक टैंकों' ने एक बेतुका विचार रखा है। उसमें उन्होंने प्रस्ताव रखा कि एक ''संयुक्त कश्मीर'' की स्थापना हो जिसमें सम्प्रभुता भारत एवं पाकिस्तान मिलकर बाटें। संप्रग सरकार ने ऐसा स्पष्ट आभास कराया है कि वह इस विचार पर सोचने के विरोध में नहीं है। भारत की एकता के लिए यह विनाशकारी है।

भाजपा का विश्वास है कि भारत की एकता एवं अखण्डता पर कोई चर्चा नहीं हो सकती। पूरा जम्मू एवं कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। भाजपा भारतीय राष्ट्रत्व के इस मूलभूत सिद्धांत के साथ किसी भी तरह का समझौता नहीं होने देगी। पाकिस्तान के साथ सम्बन्ध सुधारना, जनता से जनता के बीच संबन्ध बढ़ाना एक बात है जबकि राज्य के भावी स्वरूप पर बातचीत करने के लिए राजी होना एक बिल्कुल अलग बात है। भाजपा इस मुद्दे पर संप्रग सरकार की नित बदलते रवैये की कठोर आलोचना करती है और मांग करती है कि जम्मू एवं कश्मीर के स्वरूप पर कोई बातचीत नहीं करने के भारत के संकल्प को पुनर्स्थापित करे।

पिछले 18 महीनों में भारत के समग्र सुरक्षा वातावरण में एक स्पष्ट गिरावट देखने में आयी है। वर्तमान राष्ट्रीय विदेश नीति के सभी तत्व सिर्फ राष्ट्रीय हितों से प्रेरित होने चाहिए, विशेषकर विकास, रक्षा, परमाणु मुद्दे तथा अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर संतुलन एवं स्थिरता जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे। ऐसा आभास होता है कि संप्रग जैसी दिग्भ्रमित विदेश नीति चला रही है, उसमें इन सभी बातों को संज्ञान में नहीं लिया गया है। आतंकवाद और घुसपैठ हमारी सुरक्षा के लिए बड़ी चिंता के विषय हैं, जो विदेश नीति के मोर्चे पर जारी उपेक्षा के कारण भी पैदा हुई है।

नीतियों के अनुपालन में मात्र हमारे राष्ट्रीय हित ही स्थायी होते हैं। वर्तमान वैश्विक सुरक्षा वातावरण तथा वर्तमान शक्ति की संरचना में हमें हमारी विदेशी नीति को पुनः परिभाषित करते हुए तादात्म्य बिठाना होगा। भाजपा यह आरोप लगाती है कि

कांग्रेसनीत और मार्क्सवादियों द्वारा समर्थित संप्रग ने हमारे राष्ट्रीय हितों की काफी बड़ी उपेक्षा की है।

———